



**VISION IAS**

[www.visionias.in](http://www.visionias.in)

**P157**

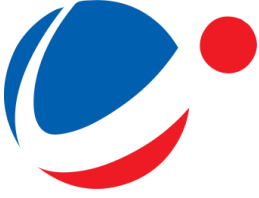
# अर्थव्यवस्था- 1 सामान्य अध्ययन



णमो आयरियाणं

**Plus Pramesh eLib**

[www.pluspramesh.in](http://www.pluspramesh.in)



**VISIONIAS**

[www.visionias.in](http://www.visionias.in)

# Classroom Study Material

भारतीय अर्थव्यवस्था

1. राष्ट्रीय आय लेखांकन

**Copyright © by Vision IAS**

*All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.*

## विषय सूची

1. राष्ट्रीय आय लेखांकन (National Income Accounting)	4
1.1. राष्ट्रीय आय लेखांकन का महत्व	6
2. राष्ट्रीय आय की अवधारणाएँ (Concepts of National Income)	6
2.1. सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product: GDP)	6
2.1.1. सांकेतिक GDP एवं वास्तविक GDP (Nominal GDP & Real GDP)	8
2.2. सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product: GNP)	9
2.2.1. विदेशों से प्राप्त निवल साधन (कारक) आय (Net Factor Income from Abroad: NFIA)	10
2.3. GDP वैश्विक स्तर पर सबसे स्वीकार्य संकेतक क्यों है?	10
2.4. मूल्यहास (Depreciation)	10
2.5. निवल घरेलू उत्पाद (Net Domestic Product: NDP)	11
2.6. निवल राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product: NNP)	11
2.7. बाजार मूल्य और साधन (कारक) लागत की अवधारणा	11
2.8. राष्ट्रीय आय (National Income: NI)	12
2.9. हस्तांतरण भुगतान (Transfer Payments)	13
2.10. व्यक्तिगत आय (Personal Income: PI)	13
2.11. व्यक्तिगत प्रयोज्य आय (Disposable Personal Income: DPI)	14
3. राष्ट्रीय आय को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting National Income)	14
4. विभिन्न देशों की राष्ट्रीय आयों की तुलना करना (Comparing National Income Across Countries)	15
4.1. विनिमय दरों के प्रकार (Types of Exchange Rates)	15
5. राष्ट्रीय आय का मापन (Measurement of National Income)	17
5.1. मूल्य वर्धन विधि (Value Added Method)	17
5.2. आय विधि (Income Method)	19
5.3. व्यय विधि (Expenditure Method)	19
5.4. विभिन्न विधियों का प्रयोग	20
5.5. GDP अवस्फीतिक एवं आधार वर्ष (GDP Deflator & Base Year)	21
5.6. राष्ट्रीय आय के मापन में कठिनाई (भारत के विशेष संदर्भ में)	22
6. GDP मापन में नवीनतम विकास (Recent Development in GDP)	23
6.1. सकल मूल्य वर्धन (Gross Value Added)	23

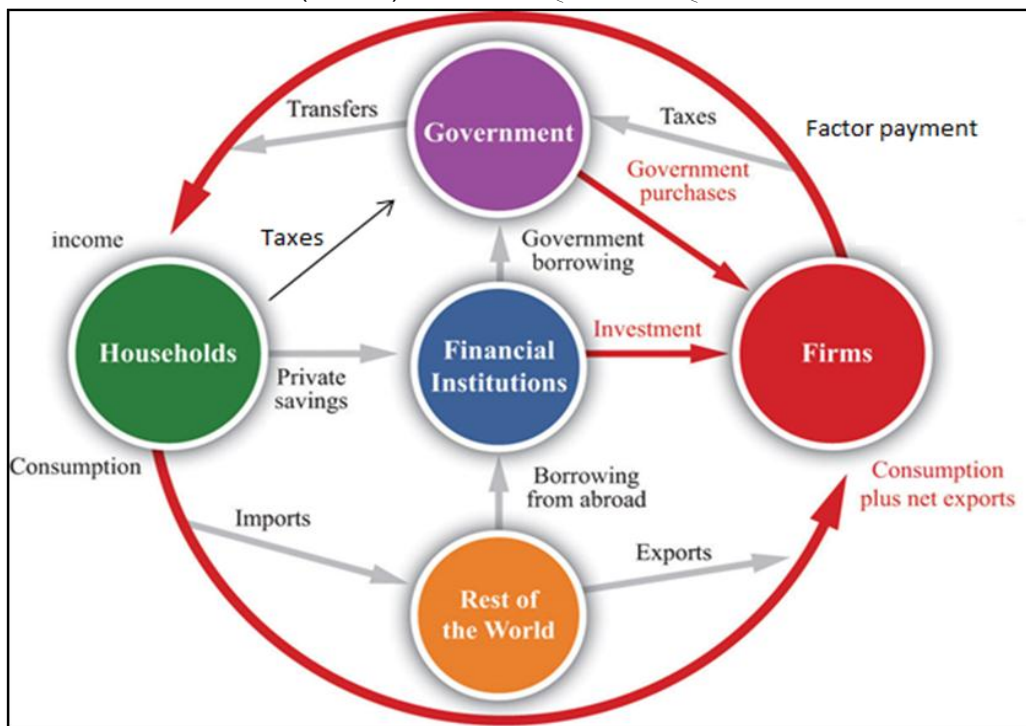
7. GDP और अन्य सूचकांकों से संबंधित विवाद	25
7.1. आर्थिक संवृद्धि बनाम आर्थिक विकास	25
7.2. GDP को प्रगति का मापन करने वाले एक पैरामीटर के रूप में मानने के विरुद्ध में अन्य तर्क	26
7.3. विकास को मापने के लिए अन्य सूचकांक	26
7.3.1 मानव विकास सूचकांक (Human Development Index: HDI)	26
7.3.2. लैंगिक विषमता सूचकांक (Gender Inequality Index : GII)	27
7.3.3. लैंगिक विकास सूचकांक (Gender Development Index: GDI)	27
7.3.4. बहुआयामी निर्धनता सूचकांक (Multidimensional Poverty Index: MPI)	28
7.3.5. असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक	28
7.3.6. ग्रीन GDP (Green GDP)	29
7.3.7. ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस (Gross National Happiness)	29
7.3.8. मानव निर्धनता सूचकांक (Human Poverty Index: HPI)	30
7.3.9. वास्तविक प्रगति संकेतक (Genuine Progress Indicator)	31

VISION IAS  
This document is personalised for

# 1. राष्ट्रीय आय लेखांकन (National Income Accounting)



- राष्ट्रीय आय लेखांकन का तात्पर्य उन विधियों या तकनीकों से है जिनका उपयोग किसी भी अर्थव्यवस्था में समग्र रूप से आर्थिक गतिविधियों के मापन के लिए होता है। जिस प्रकार एक व्यक्ति या एक संस्था की आय की गणना की जा सकती है, ठीक उसी प्रकार एक देश की आय की भी गणना की जा सकती है। **साइमन कुजनेट्स** को राष्ट्रीय आय लेखांकन का जनक माना जाता है।
- राष्ट्रीय आय लेखांकन के विभिन्न तरीकों को समझने से पहले हमारे लिए अर्थव्यवस्था की समग्र गतिविधियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। नीचे दिया गया फ्लो चार्ट एक **खुली अर्थव्यवस्था** में संसाधनों (धन/आय) के चक्रीय प्रवाह को दर्शाता है:



चित्र 1: आय या संसाधनों का चक्रीय प्रवाह

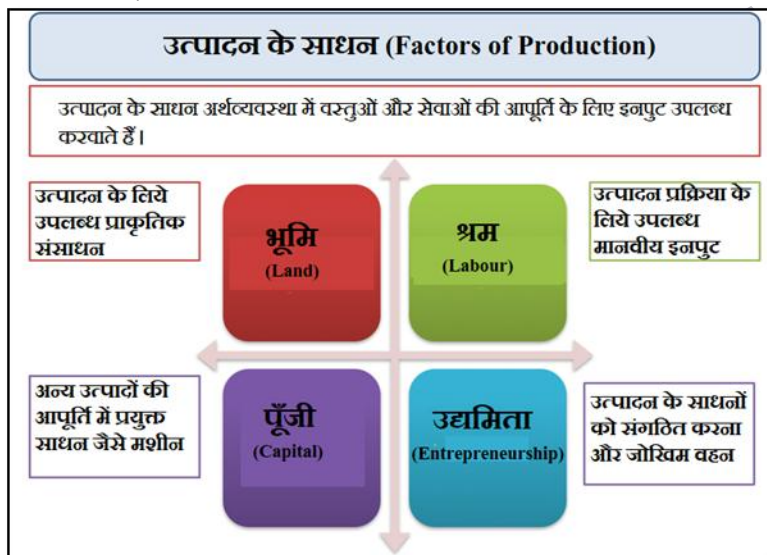
- उत्पादन, उपभोग और निवेश अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण गतिविधियाँ हैं। इन्हीं के संचालन में अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के बीच लेन-देन होते हैं। इन लेन-देनों में आय और व्यय के प्रवाह का चक्रीय स्वरूप हो जाता है। यह दो सिद्धांतों पर आधारित है:
  - क्रेता का व्यय विक्रेता की आय बन जाती है और
  - वस्तुएँ और सेवाएँ विक्रेता से क्रेता की ओर प्रवाहित होती हैं। इनके लिए मौद्रिक भुगतान विपरीत दिशा में अर्थात् क्रेता से विक्रेता की ओर प्रवाहित होता है। इस प्रकार वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह (वास्तविक प्रवाह) एक दिशा में होते हैं तो दूसरी ओर मौद्रिक भुगतान के रूप में प्रवाह (मौद्रिक प्रवाह) होते हैं। ये दोनों प्रवाह एक साथ मिलकर चक्रीय प्रवाह कहलाते हैं।
- परिवार क्षेत्र (Households sector), फर्म (व्यापारिक कंपनी) से वस्तुएँ एवं सेवाएँ खरीदता है। वस्तुओं एवं सेवाओं की बिक्री से जो आय प्राप्त होता है, उनका प्रयोग फर्म के स्वामियों द्वारा मजदूरों को मजदूरी का भुगतान करने, भू-स्वामी को किराया देने और स्वयं को लाभांश का वितरण आदि करने में किया जाता है। इस प्रकार सकल घरेलू उत्पाद (GDP) वस्तुतः वस्तुओं एवं सेवाओं के लिए लोगों द्वारा बाजार में व्यय की गई कुल राशि के बराबर होता है। साथ ही यह उत्पादन के कारकों के लिए बाजार में फर्मों द्वारा भुगतान की गई कुल मजदूरी, किरायों और लाभ के बराबर भी होती है।

- उपर्युक्त फ्लो चार्ट द्वारा सामान्य अर्थव्यवस्था में परिवारों एवं फर्मों के मध्य हुए सभी लेनदेन का वर्णन किया गया है। यह फ्लो चार्ट इस विषय-वस्तु को यह मानकर सरलीकृत करता है कि सभी वस्तुएँ एवं सेवाएँ लोगों द्वारा खरीदी जाती हैं और लोग अपनी संपूर्ण आय का खर्च करते हैं।
- इसमें यह दर्शाया गया है कि आय/धन लगातार लोगों से फर्मों की ओर गतिशील होता है और पुनः लोगों के पास वापस आता है।



### उत्पादन के साधन (Factors of Production)

एक उत्पादक को वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के लिए कुछ वस्तुओं या सेवाओं की आवश्यकता होती है, जिन्हें हम उत्पादन के साधन कहते हैं। आधुनिक उत्पादन प्रक्रिया में सामान्यतया उत्पादन के चार साधनों- भूमि (Land), श्रम (Labour), पूँजी (Capital) तथा उद्यमिता (Entrepreneurship) को सम्मिलित किया जाता है।



- धन के इस प्रवाह को GDP द्वारा मापा जाता है। किसी अर्थव्यवस्था के लिए इसकी गणना निम्नलिखित दो तरीकों से की जा सकती है:
  - लोगों द्वारा किये गये कुल व्यय को जोड़कर; या
  - फर्मों द्वारा भुगतान की गई कुल आय (मजदूरी, किराया, लाभ) को जोड़कर।
- चूंकि किसी अर्थव्यवस्था में सभी व्यय वस्तुतः किसी की आय के रूप में होते हैं, इसलिए हम किसी भी पद्धति से GDP की गणना करें, GDP का मान समान ही प्राप्त होता है।

### खुली एवं बंद अर्थव्यवस्था (Open and Closed Economy)

- खुली अर्थव्यवस्था से तात्पर्य ऐसी अर्थव्यवस्था से है जिसके विश्व के अन्य देशों से आर्थिक संबंध होते हैं। आज विश्व के अधिकांश देश खुली अर्थव्यवस्थाओं के उदाहरण हैं। जिन देशों (अर्थव्यवस्थाओं) के शेष विश्व से कोई आर्थिक लेन-देन नहीं होते, उन्हें हम बंद अर्थव्यवस्थाएँ कहते हैं। वर्तमान समय में विश्व में ऐसे किसी देश का होना बहुत कठिन है।
- एक बंद अर्थव्यवस्था के अंतर्गत हम उस देश की सीमाओं के अंतर्गत होने वाली आर्थिक गतिविधियों का ही विश्लेषण करते हैं। ऐसी अर्थव्यवस्था में आयात, निर्यात एवं विदेशी निवेश शून्य होता है।
- इसके विपरीत खुली अर्थव्यवस्था में हम एक देश के आर्थिक लेन-देन का अध्ययन दूसरे देशों के साथ करते हैं, अर्थात् इसमें विदेशी क्षेत्र भी जुड़ जाता है। इसमें आयात, निर्यात, विदेशी निवेश एवं विनिमय दर जैसी महत्वपूर्ण अवधारणाओं का भी विश्लेषण किया जाता है।





### 1.1. राष्ट्रीय आय लेखांकन का महत्व

- **अंतर्राष्ट्रीय तुलना (International Comparison):** राष्ट्रीय आय लेखांकन के माध्यम से किसी देश की अर्थव्यवस्था की संवृद्धि दर और उस देश के विकास का मापन संभव होता है। इसका प्रयोग विभिन्न देशों के लोगों के जीवन स्तर की तुलना करने के लिए किया जा सकता है।
- **व्यावसायिक निर्णय (Business Decisions):** राष्ट्रीय आय लेखांकन अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के सापेक्ष योगदान और इन क्षेत्रों की अभीष्ट क्षमता को दर्शाता है। यह क्षमता व्यवसायी वर्ग का भविष्य में उत्पादन हेतु विभिन्न क्षेत्रों के चयन करने और योजना निर्माण में मार्गदर्शन करती है।
- **नीति निर्माण (Policy Formulation):** राष्ट्रीय आय लेखांकन अर्थव्यवस्था में आय एवं संसाधनों के वितरण पर प्रकाश डालता है, जिससे सरकार को देश में समानता को बढ़ावा देने और विकासात्मक कार्यों हेतु संसाधनों के समुचित आवंटन में मदद मिलती है।
- **नीतिगत मूल्यांकन (Policy Evaluation):** राष्ट्रीय आय लेखांकन, विशिष्ट आर्थिक उपलब्धियों और विफलताओं को उजागर करता है। इस प्रकार यह सरकारी नीतियों के मूल्यांकन में लोगों की मदद करता है।
- **वार्षिक बजट (Annual Budget):** राष्ट्रीय आय लेखांकन से सरकार को अपने बजटीय नीति को आकार देने में मदद मिलती है। आय एवं रोजगार की अनिश्चितता को दूर करने के लिए सरकार राष्ट्रीय आय लेखांकन विश्लेषण करती है और तत्पश्चात् आवश्यकतानुसार अपनी कर एवं उधार लेने हेतु नीति बनाती है। किसी अर्थव्यवस्था में मंदी या मुद्रास्फीति की समस्या को दूर करने के लिए सरकार घाटे या अधिशेष वाला बजट पेश करती है।
- **राष्ट्रीय व्यय में सहायक (Useful in National Expenditure):** राष्ट्रीय आय के आंकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि राष्ट्रीय व्यय को निवेश और उपभोग में कैसे विभाजित किया जाए। आय लेखांकन से समष्टि अर्थव्यवस्था की क्रियाविधि को भी समझने में मदद मिलती है।

## 2. राष्ट्रीय आय की अवधारणाएँ (Concepts of National Income)

समय के साथ-साथ राष्ट्रीय आय की गणना की विधि में कई सुधार हुए हैं। किसी देश की आय की गणना हेतु अर्थशास्त्रियों द्वारा चार प्रकार की अवधारणाओं - GDP, GNP, NDP और NNP का उपयोग किया जाता है।

### 2.1. सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product: GDP)

- किसी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित समयावधि (एक वर्ष या तिमाही या अर्ध-वार्षिकी) में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल बजार मूल्य को सकल घरेलू उत्पाद कहते हैं। भारत के लिए यह समयावधि 1 अप्रैल से 31 मार्च तक है।
- अतः यह किसी देश की घरेलू सीमा के अंतर्गत निवासियों या गैर-निवासियों या फर्मों द्वारा एक वित्तीय वर्ष में उत्पादित समस्त अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं का मौद्रिक मूल्य होता है। सरल शब्दों में कहें तो यह किसी व्यक्ति या फर्म की **राष्ट्रीयता पर विचार किए बिना** देश की घरेलू सीमा के भीतर उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों का मापन करता है।
- उदाहरण के लिए, एक जापानी कंपनी द्वारा भारत में विनिर्मित कारों को भारत के GDP में सम्मिलित किया जाएगा जबकि टाटा मोटर्स द्वारा ब्रिटेन में विनिर्मित जगुआर कारों को भारत के GDP में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।
- GDP केवल वस्तुओं एवं सेवाओं के अंतिम उत्पादन को ही संदर्भित करता है। इसमें केवल पूर्ण या अंतिम वस्तुओं को इसलिए सम्मिलित करते हैं ताकि (वस्तुओं एवं सेवाओं से संबंधित) कच्चे माल, मध्यवर्ती उत्पाद और अंतिम उत्पादों की दोहरी या तिहरी गणना से बचा जा सके।

### आर्थिक या घरेलू सीमा (Economic or Domestic Territory)



सिस्टम ऑफ नेशनल एकाउन्ट्स में घरेलू सीमा को आर्थिक सीमा के रूप में परिभाषित किया गया है। राष्ट्रीय आय लेखांकन में इसका अलग अर्थ तथा महत्व है। घरेलू या आर्थिक सीमा वैसे देश की भौगोलिक सीमा से संबंधित होती है तथा आर्थिक सीमा में भौगोलिक सीमा को सम्मिलित किया जाता है पर आर्थिक सीमा तथा भौगोलिक सीमा बिल्कुल एक ही नहीं होगी। **आर्थिक सीमा** के अंतर्गत निम्नांकित को सम्मिलित किया जाता है-

- वायु क्षेत्र (Air-Space) तथा क्षेत्रीय जल क्षेत्र (territorial water) जिस पर मत्स्यन, ईंधन या खनिज दोहन का अधिकार राष्ट्र का हो।
- शेष विश्व में सीमान्तर्गत विदेशी अंतःक्षेत्र (territorial enclaves) जिसके अन्तर्गत दूतावास, मिलिट्री बेस, प्रवजन कार्यालय भी सम्मिलित है।
- मुक्त क्षेत्र (free zones), कस्टम के नियंत्रण में आने वाले समुद्रतट के उद्यम, पर इसके अंतर्गत देश की सीमा में दूसरी सरकारों या देशों के विदेशी अंतः क्षेत्र नहीं आयेगें जिनमें उनके दूतावास हैं या जहाँ विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ या उनके कार्यालय या अन्य देशों के मिलिट्री बेस हैं।

इस प्रकार जहाँ तक आर्थिक सीमा का प्रश्न है इसमें देश की भौगोलिक सीमा का वह भाग नहीं सम्मिलित होगा जो दूसरे देशों को विदेशी अंतः क्षेत्र के रूप में दूतावास या अन्य कार्यालयों के लिए दिए गए हैं या अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को दिए गए हैं या अन्य जिनका उल्लेख ठीक ऊपर किया गया है। इस दृष्टि से आर्थिक सीमा भौगोलिक सीमा से छोटी होगी पर इसमें विश्व के अन्य देशों के भी ऐसे हिस्से जो इस देश को मिलिट्री बेस, दूतावासों के रूप में विदेशी अंतः क्षेत्र के रूप में प्राप्त हुए होंगे उन्हें उक्त देश की आर्थिक सीमा (घरेलू सीमा) में सम्मिलित किया जायेगा, यद्यपि वह दूर-दराज तक भी किसी रूप में उस देश की भौगोलिक सीमा का भाग नहीं हो सकता। इस दृष्टि से कुल आर्थिक सीमा भौगोलिक सीमा से बड़ी होगी। इस प्रकार आर्थिक या घरेलू सीमा में निम्नलिखित सम्मिलित होते हैं:

- देश की भौगोलिक, राजनैतिक एवं सामुद्रिक सीमा।
  - मछली पकड़ने की नौकाएँ, दो या दो से अधिक देशों के मध्य चलने वाले जहाज, वायुयान आदि।
  - पेट्रोलियम एवं गैस अन्वेषण के लिए समुद्र में स्थित स्थान।
  - देश के विदेशों में दूतावास, वाणिज्यिक दूतावास एवं सैनिक अड्डे।
- 
- उदाहरण के लिए, ऑटोमोबाइल के मूल्य में पहले से ही उसके विनिर्माण हेतु उपयोग में लाए जाने वाले इस्पात, कांच, रबड़ और अन्य घटकों के मूल्य सम्मिलित होते हैं। इन्हें नीचे संक्षिप्त में समझाया गया है:
    - **अंतिम उत्पाद (Final Output):** इसका अर्थ है 'अंतिम उपभोग के लिए क्रय की गयी वस्तुएँ एवं सेवाएँ।
    - **मध्यवर्ती वस्तुएँ अथवा उत्पादन के कारक या कच्चा माल (Intermediate Goods/Factors of Production/Raw Materials):** किसी अन्य उत्पाद के उत्पादन में इनपुट या आगत या कच्चे माल के रूप में प्रयुक्त उत्पाद को मध्यवर्ती वस्तुओं की श्रेणी में रखा जाता है।
  - **दोहरी गणना (Double counting)** से बचाव के दो तरीके हैं:
    - केवल अंतिम उत्पाद के मूल्य की गणना करना, या
    - किसी वस्तु के उत्पादन के आरंभिक चरण से लेकर अंतिम चरण तक हुए मूल्य वर्धन की गणना करना। उसके बाद उक्त वस्तु के विक्रय मूल्य में से मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य को घटा देना।





- कोई वस्तु अंतिम है या माध्यमिक, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि वह वस्तु उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग में आ रही या उपभोग हेतु प्रयोग आ रही है। एक ही वस्तु किसी स्थिति में अंतिम होगी तो दूसरी स्थिति में माध्यमिक हो सकती है।
- जैसे बेकरी में ब्रेड बनाने में प्रयोग में आने वाला आटा माध्यमिक वस्तु है, जबकि घर में रोटी बनाने में प्रयोग में आने वाला आटा उपभोग वस्तु (अन्त्य) है।

### 2.1.1. सांकेतिक GDP एवं वास्तविक GDP (Nominal GDP & Real GDP)

- सांकेतिक (Nominal) GDP:** जब वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य की गणना चालू वर्ष की कीमतों पर (current year prices) की जाती है तो वह चालू मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद अर्थात् सांकेतिक GDP कहलाता है।
- वास्तविक (Real) GDP:** जब वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य की गणना आधार वर्ष (base year) की कीमतों पर की जाती है, तो उसे स्थिर मूल्य पर सकल घरेलू उत्पाद अथवा वास्तविक GDP कहते हैं। अर्थात् वास्तविक GDP द्वारा वर्तमान वर्ष में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों की गणना आधार वर्ष के कीमतों पर की जाती है। उल्लेखनीय है कि आधार वर्ष पर मूल्य स्थिर होते हैं।
- वास्तविक GDP वस्तुतः GDP की गणना करने का एक बेहतर तरीका है क्योंकि एक विशेष वर्ष में अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति की उच्च दर के कारण GDP में अचानक उछाल देखा जा सकता है। इसलिए, वास्तविक GDP हमें मुद्रास्फीति और मुद्रा की क्रय शक्ति में परिवर्तन के बावजूद, उत्पादन में हुई वास्तविक वृद्धि या कमी को निर्धारित करने में मदद करता है।
- इसे बेहतर तरीके से समझने के लिए, आप एक ऐसी अर्थव्यवस्था पर विचार कीजिए जो केवल सेब का उत्पादन करती है। मान लीजिए कि वर्ष 2010 के दौरान एक अर्थव्यवस्था में 100 सेब उत्पादित हुए थे और प्रत्येक सेब की लागत 1 डॉलर थी। इस प्रकार वर्ष 2010 में उक्त अर्थव्यवस्था का सांकेतिक GDP 100 डॉलर (1 डॉलर को 100 से गुणा करना) होगी। अब मान लीजिए की 5 वर्षों के बाद, सेब का उत्पादन एक वर्ष में 50 सेब तक घट गया। हालांकि, कीमतें 3 डॉलर तक बढ़ गईं। अब वर्ष 2015 के लिए सांकेतिक GDP 150 डॉलर (3 डॉलर को 50 से गुणा करने पर प्राप्त) होगा। इस प्रकार हम यह प्रतीत होता है कि 2010 की तुलना में 2015 में GDP में वृद्धि हुई है, परंतु वास्तव में 2015 के दौरान अर्थव्यवस्था में उत्पादन में कमी आई है।
- अब यदि वर्ष 2010 को आधार वर्ष के वास्तविक वर्ष मान लिया जाए तो GDP 100 डॉलर हो जाएगी जबकि वर्ष 2015 के लिए यह 2010 की स्थिर कीमतों पर (आधार वर्ष की कीमत पर) 50 डॉलर होगी। इस प्रकार स्पष्ट है कि यहाँ वास्तविक GDP में गिरावट अर्थव्यवस्था में उत्पादन में गिरावट के अनुपात में है। अतः वास्तविक GDP किसी भी अर्थव्यवस्था की सांकेतिक GDP की तुलना में एक बेहतर तस्वीर प्रस्तुत करता है। (आधार वर्ष को आगे विस्तार से समझाया गया है।)

## 2.2. सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product: GNP)



- GNP और GDP की अवधारणायें परस्पर घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि GDP की अवधारणा का अर्थ एक निश्चित समयावधि में किसी देश की घरेलू सीमा निवासियों और गैर-निवासियों दोनों द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्यों से है। इस प्रकार GDP में 'उत्पादन किसके द्वारा किया गया है' के स्थान पर 'उत्पादन कहाँ पर हुआ है' पर ध्यान दिया जाता है।
- दूसरी ओर, घरेलू सीमा के भीतर या बाहर एक देश के निवासियों द्वारा उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल मूल्य को GNP कहते हैं। इस प्रकार जब भारत के GNP की गणना की जाती है तो इसके अंतर्गत भारत के भीतर तथा विश्व के अन्य देशों में भारतीय नागरिकों द्वारा उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं एवं सेवाओं के कुल मूल्यों की भी गणना की जाती है।
- आइए एक उदाहरण के माध्यम से इसे सरल तरीके से समझते हैं; जैसे- माइक्रोसॉफ्ट USA की एक फर्म है। जब यह भारत में कोई कंपनी खोलती है, तो उसके उत्पादन का मूल्य भारत के GDP में सम्मिलित किया जाएगा लेकिन भारत की GNP की गणना करते समय इसे सम्मिलित नहीं किया जाएगा। इसी तरह जब इंफोसिस या TCS जैसी भारतीय कंपनियाँ अमेरिका में अपनी सेवाएँ उपलब्ध करवाती हैं, तो इन सेवाओं का मूल्य भारत के GDP में सम्मिलित नहीं किया जाता है, लेकिन भारत के GNP की गणना करते समय उन्हें सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार GDP 'जहाँ उत्पादन होता है' उससे संबंधित है। जबकि दूसरी ओर, GNP 'जो उत्पादन करते हैं' से संबंधित है।

**GNP = GDP + विदेश से निवल साधन आय (Net Factor Income from Abroad : NFIA)**

- यदि किसी अर्थव्यवस्था में FDI का अंतर्प्रवाह काफी अधिक है तथा बहिर्प्रवाह अत्यल्प है तो ऐसी परिस्थिति में सामान्यतया उक्त देश की GDP उसके GNP की तुलना में अधिक होगी। वहीं दूसरी ओर, यदि किसी देश के नागरिक अत्यधिक संख्या में विदेश जाते हैं एवं वहाँ आर्थिक गतिविधियों में संलग्न होकर अपने गृह देश में बहुत अधिक पैसा भेजते हैं, जबकि उस देश में विदेशी नागरिकों की आर्थिक गतिविधियाँ न्यून हैं (अर्थात् विदेशी नागरिक यहाँ से अपने गृह देश में कम पैसा भेजते हैं) तो ऐसी परिस्थितियों में उक्त देश की GNP उसके GDP से अधिक होगी। भारत की बात करें तो इसकी GNP इसके GDP की तुलना में कम है क्योंकि भारत में विदेशों से प्राप्त निवल आय सदैव नकारात्मक रही है।
- यद्यपि GDP का उपयोग किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की स्थिति को जानने के लिए किया जाता है, किंतु कुछ अर्थशास्त्री इसे एक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति को प्रतिबिंबित करने वाला नहीं मानते हैं। चूंकि GDP की गणना में विदेशी कंपनियों द्वारा किसी देश में अर्जित लाभ को भी सम्मिलित किया जाता है और ये लाभ इन विदेशी निवेशकों द्वारा अपने गृह देश (या अन्य देश में भी) में पुनः प्रेषित कर दिए जाते हैं। अतः ऐसी स्थिति में यदि देश के बाहर भेजा जाने वाला उक्त लाभ किसी देश के नागरिकों द्वारा विदेशों में अर्जित आय एवं विदेशी परिसंपत्तियों से हुए लाभ की तुलना में बहुत अधिक हैं, तो निश्चित ही उस देश की GNP उसके GDP की तुलना में अत्यंत कम होगी।